ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

बस्तर जिले में लाख पालन के माध्यम से आर्थिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. रविश कुमार सोनी सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई छत्तीसगढ़

श्रीमती शिखा अग्रवाल शोधार्थी कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई छत्तीसगढ़

प्रस्तावना :–

बस्तर क्षेत्र में लाख पालक वृक्ष बहुतायत पाए जाते हैं। लाख पालन व लाख पर आधारित उद्योग ऐसे मुनाफे का कार्य है जो कम लागत व कम समय में किया जा सकता है। यह ग्रामीणों के लिए रोजगार के अवसर तो उपलब्ध कराता ही है साथ ही महिलाओं हेतु रोजगार का भी एक सशक्त विकल्प साबित हो सकता है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए बस्तर क्षेत्र के आदिवासियों हेतु यह अतिरिक्त आय कमाने का एक अच्छा जरिया है परंतु वैज्ञानिक तकनीकों की जानकारी व जागरूकता के अभाव में वांछित परिणामों को प्राप्त करना इस क्षेत्र में चुनौती है जिस हेतु प्रशिक्षण संबंध कार्य भी सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती के प्रचार–प्रसार की काफी संभावनाएं इस क्षेत्र में विद्यमान हैं।

शोध का क्षेत्र :–

शोध का क्षेत्र बस्तर संभाग के अंतर्गत जिला बस्तर है जिसका क्षेत्रफल 4029.98 वर्ग कि.मी. है। संभाग एवं जिला मुख्यालय जगदलपुर है। यहां की 70 प्रतिशत जनसंख्या जनजातिय वर्ग की बस्तर जिला सरल स्वभाव, जनजातिय समुदाय एवं प्राकृतिक संपदा संपन्न है। यह क्षेत्र 7 विकासखंडों में विभाजित है– जगदलपुर, बस्तर, बकावंड, लोहंडीगुड़ा, तोकापाल, दरभा एवं बास्तानार। वनोपज संग्रहण ग्रामीण उपार्जन के प्रमुख स्त्रोतों से एक है एवं लाख पालन भी इसी श्रेणी में सम्मिलित है।

शोध कार्य का उद्देश्य :–

लाख पालन के माध्यम से स्वरोजगार के अवसरों की विवेचना ।
लाख उद्योग की संभावनाओं का विश्लेषण।
लाख पालन के माध्यम से महिला स्वरोजगार में वृद्धि का अध्ययन।

अध्ययन पद्धति :–

अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है जो प्राथमिक व द्वितीयक दोनों ही आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक समंक साक्षात्कार, अनुसूची के माध्यम से बस्तर के ग्रामवासियों से एकत्रित किए गए हैं एवं द्वितीयक समंक लघु वनोपज सहकारी संघ बस्तर संभाग के जगदलपुर स्थित मुख्यालय व संघ के प्रकाशनों के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं।

शोध परिकल्पना :–

शोध पत्र लेखन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएं ली गई हैं।

1. लाख पालन स्वरोजगार व अतिरिक्त आय का सशक्त माध्यम है।
2. लाख पालन के माध्यम से महिला स्वरोजगार को बढ़ावा मिला है।
3. लाख पर आधारित उद्योगों की स्थिति संतोषजनक है।

अध्ययन की सीमाएं :–

1. किसी भी अनुसंधान में सबसे महत्वपूर्ण कार्य आंकड़ों का संग्रहण है जिसमें समय व लागत दोनों ही अधिक आती है।
2. चूंकि शोध का क्षेत्र नक्सलवाद जैसी गंभीर समस्या से ग्रसित है जहां विकास कार्य अन्य क्षेत्रों में अत्यंत पिछड़ा है अतः सर्वेक्षण की दृष्टि से कुछ ऐसे भी हैं जो दुर्गम व पहुंच से बाहर है तथा वहां सर्वेक्षण संभव नहीं है।
3. आंकड़ों की प्राप्ति उत्तरदाता की रूचि पर निर्भर करता है, कई बार उत्तरदाताओं द्वारा अपेक्षित सहयोग प्राप्त नहीं हो पाता।

अध्ययन का महत्व :–

छततीसगढ़ राज्य लाख उत्पादन के अग्रणी राज्यों में से एक हैं तथा बस्तर वनमंडल के अंतर्गत लाख पोशक वृक्ष जैसेः– पलाश, कुसुम, बेर की भरमार है जिससे लाख उत्पादन यहां के आदिवासियों के लिए अतिरिक्त आय का एक जरिया बन सकता है। साथ ही लाख पालन से संबंधित कार्यों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करके महिला रोजगार को बढ़ावा दिया जा सकता है। कच्चे माल के रूप में लाख का प्रयोग जिन वस्तुओं के निर्माण में किया जाता है उनसे संबंधित उद्योगों की स्थापना से स्वरोजगार में वृद्धि की जा सकती है।

शोधपत्र के माध्यम से उपरोक्त तथ्यों का विश्लेषण शोध क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण होगा। प्रस्तुत शोधपत्र की यही आशा है।

लाख को प्रकृति का वरदान कहा जाता है क्योंकि यह एक प्राकृतिक राल है। लाख या लाह शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के "लाक्षा" शब्द से हुई है। माना जाता है कि लाखों कीड़ों से निर्मित होने के कारण इसका नाम लाक्षा पड़ा। लाख के कीड़े अत्यंत सूक्ष्म होते हैं तथा अपने शरीर से लाख उत्पन्न करके हमें आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। लगभग 34 हजार लाख के कीड़े 1 कि.ग्रा. रंगीनी लाख तथा 14400 लाख के कीड़े 1 कि.ग्रा. कुसमी लाख पैदा करते हैं।

जहां तक लाख की खेती का प्रश्न है तो वह आज फायदे का सौदा बन गया है। शासन की विभिन्न योजनाओं के तहत् वन विभाग द्वारा बस्तर वासियों को लाख पालन में समर्थ बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

तालिका कमांक–1

बस्तर वन मंडल	
भौगोलिक क्षेत्रफल	4034.82 वर्ग कि.मी.
कुल वन क्षेत्रफल	2211.80 वर्ग कि.मी.
लाख पालक किसान	4119
स्वसहायता समूह	188
लाख पोषक वृक्ष	18835

बस्तर क्षेत्र के जगदलपुर, माचकोट, दरभा, करपावंड, चित्रकोट, बस्तर, भानपुरी व कोलेंग क्षेत्रों में लाख का पालन स्थानीय कृषकों द्वारा किया जा रहा है।

लाख का स्त्रावण लेसीफेरिडी परिवार के सदस्य द्वारा किया जाता है, यह शल्कीय मादा लाख कीट के शरीर में फैली सूक्ष्म ग्रंथियों से उत्सर्जित गाढ़ा चिपचिपा पदार्थ होता है जो वातावरण के संपर्क में आकर सूख जाता है। यह लाख कीट का सुरक्षात्मक आवरण होता है जो परजीवी कीटों से स्वयं की रक्षा हेतु स्त्रावित किया जाता है। भारत में व्यवसायिक लाख का उत्पादन मुख्यतः केरिया लेक्का प्रजाति द्वारा किया जाता है।

लाख कीट की दो किस्में पाई जाती हैं रंगनी व कुसमी। प्रत्येक किस्म से वर्ष में 2 फसलें प्राप्त की जा सकती हैं व बीहन लाख का प्रयोग बीज के रूप में संचारण हेतु किया जाता है। संपूर्ण बस्तर क्षेत्र में लाख के लगभग 19000 वृक्ष हैं जिनसे अतिरिक्त आय की संभावना को ध्यान में रखते हुए स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के तहत् लाख पालन हेतु प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। लाख पालक किसानों से संबंधित आंकड़े निम्न तालिका में प्रदर्शित हैं:–

तालिका कमांक–2

योजना का नाम	परिक्षेत्र का नाम	समूहों की संख्या	परिवार संख्या	वृक्ष संख्या	योजना लागत (लाख रू. में)
स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना	जगदलपुर, माचकोट, दरभा, करपावण्ड, चित्रकोट, बकावण्ड, बस्तर, भानपुरी, कोलेंग	50	1000	5000	118.65702
आदर्श लाख पालन परियोजना	जगदलपुर, माचकोट, दरभा, चित्रकोट, बकावण्ड, करपावंड, भानपुरी, बस्तर, कोलेंग	135	1549	119.57	71.01
निजी किसान (जो योजना में शामिल नहीं हुए हैं।)		–	1600	6000	0
योग		185	4346	18745	236.63

स्त्रोत :– बस्तर वनमंडल प्रकाशन

बस्तर के वन वनवासियों के कुबेर

तालिका अध्ययन से स्पष्ट है कि 4000 से भी अधिक परिवार लाख पालन के कार्य में

लगे हैं एवं योजनाओं पर 238 लाख रू. लगभग खर्च किए जा चुके हैं। लाख पालन एवं प्रसंस्करण के माध्यम से आय के साधन उपलब्ध कराने हेतु लघु वनोपज संघ द्वारा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के पंचायत व ग्रामीण विकास विभाग को भेजे गए लाख पालन व प्रसंस्करण माइक्रोइंटरप्राइज़ेस स्थापना संबंधी प्रस्ताव पर भारत सरकार से दिसंबर 2009 में स्वीकृति प्राप्त हुई थी। इस योजना के तहत् करीबी रेखा के नीचे आने वाले 13000 हितग्राहियों को लाभान्वित किए जाने का लक्ष्य था एवं परियोजना की अवधि 2009–10 से 2013–14 थी। उक्त अवधि के अंतर्गत उत्पादित लाख संबंधी आंकड़े निम्न तालिका में प्रदर्शित हैं–

तालिका कमांक–3

वर्ष	लगाई गई मात्रा (कि.ग्रा.) में	बीहन लाख राशि रू. में	उत्पादित मात्रा (कि.ग्रा.) में	छीलन लाख राशि रू. में	उत्पादित मात्रा (कि.ग्रा.) में	बीहन लाख बराशि रू. में	कुल राशि
2009	4100.00	820000.00	1624.00	146160.00	18487.00	2033570.00	2179730
2010	8110.00	1456800.00	5300.00	1005000.00	25424.00	3046870.00	4051870
2011	4446.00	1071200.00	3673.00	526950.00	15135.00	1923600.00	2450550
2012	9146.00	4330425.00	4222.50	2161325.00	54754.00	3129260 0.00	3345392 5
2013	8703.00	3307140.00	2500.00	1750000.00	10056.00	6532500.00	8282500
योग	34505.72	1097656 5.00	1719.50	5589435.00	123850.00	4482914 0.00	5041587 5.00

स्त्रोत :–लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित

उपरोक्त आंकड़े प्रदर्शिम करते हैं कि बीहन लाख व छीलन लाख दोनों की ही उत्पादन की स्थिति संतोषजनक है व उत्पादन में वृद्धि पायी गयी है। वर्ष 2011 में फसल के खराब होने के कारण वांछित उत्पादन नहीं हो पाया परंतु वर्ष 2012 लाख पैदावार की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा।

बस्तर जिले के 5 ग्रामों के लाख पालक किसानों से साक्षात्कार के माध्यम से लाख पालन से संबंधित तथ्यों से प्राप्त सूचनाएं निम्न तालिका में प्रदर्शित हैं।

तालिका कमांक –4

	हां	नहीं
1.क्या प्रारंभ से ही लाख पालन की वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करते हैं?	6	14
2.लाख पालन को अतिरिक्त आमदानी का अच्छा स्त्रोत मानते हैं?	20	00
3.वैज्ञानिक पद्धति से लाख उत्पादन हेतु प्रशिक्षण प्राप्त किया है?	16	4
4.क्या मुखिया के अलावा परिवार के अन्य सदस्यों को भी रोजगार प्राप्त हुआ है?	15	5
5.क्या परिवार की महिलाएं भी लाख पालन कार्य में संलग्न हैं?	18	2
6.प्रशिक्षण पश्चात् आधुनिक तकनीक से क्या उत्पादन की मात्रा में वृद्धि हुई है?	18	2

स्त्रोतः–साक्षात्कार

साक्षात्कार माध्यम से प्रदर्शित तथ्यों के एकत्रण से पता चलता है कि प्रारंभ में अधिकांश लाख पालक कृषक परंपरागत पद्धति से लाख पालन करते थे किंतु बाद की अवधि में प्रशिक्षण प्राप्त कर वैज्ञानिक पद्धति से लाख पालन कर आर्थिक लाभ अर्जित किया गया एवं अतिरिक्त आय का सृजन करने के साथ परिवार के अन्य सदस्यों को भी रोजगार प्राप्त हुआ।

लाख को पेड़ों से एकत्रण पश्चात् बाद के कार्यों में परिवार की महिलाओं की सक्रिय भूमिका देखी गई, इस तरह यह महिलाओं हेतु भी रोजगार का एक अच्छा विकल्प साबित हुआ है।

समस्याएं:–

बस्तर क्षेत्र में लाख पालक वृक्षों की प्रचुरता होने के कारण लाख पालन रोजगार का एक सशक्त माध्यम है परंतु लाख के उत्पादन के साथ ही प्रसंस्करण संबंधी कार्यों के लिए उद्योगों की अल्पता है, वर्तमान में बस्तर संभाग के अंतर्गत केवल कांकेर में लाख शोधन केन्द्र परिचालित है जबकि क्षेत्रफल व उत्पादन की दृष्टि से ऐसे अनेक केन्द्रों की महती आवश्यकता है, साथ ही इस क्षेत्र की नक्सलवादी पृष्ठभूमि होने के कारण बाहरी व्यक्तियों द्वारा भी इस प्रकार के उद्योगों का संचालन इस क्षेत्र में नहीं हो पाता। लाख पर आधारित कुटीर उद्योग और बड़ी औद्योगिक इकाईयां दोनों ही स्थापित की जा सकती है जिसके लिए कच्चे माल की भी कमी बस्तर क्षेत्र में नहीं है परंतु लाख से बनने वाले ऐसे मूल्यवान पदार्थ जिनका निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सके के निर्माण संबंधी इकाईयां यहां अवस्थित नहीं हैं।

निदान :–

लाख आधारित उद्योगों का महत्व अत्यंत विशेष है, बहुत से ऐसे पदार्थ हैं जिनमें लाख का प्रयोग अवयव के रूप में होता है। इस कीट के पालन में थोड़े से तकनीकी ज्ञान एवं कम समय देकर भी इसकी खेती आसानी से की जा सकती है। इस हेतु आवश्यक है कि इस कार्य के लिए क्षेत्र के युवाओं को प्रोत्साहित किया जाए।

साथ ही सरकार द्वारा इस क्षेत्र में लाख शोधन केंद्रों की भी स्थापना की जानी चाहिए, जिससे लाख के उत्पादन के पश्चात् की समस्त क्रियाएं संपन्न की जा सके व अधिकाधिक रोजगार का सृजन हो। लाख से बनने वाले उत्पादों का निर्माण यदि क्षेत्र में ही किया जाए व उद्यमियों को इस क्षेत्र में उद्यम लगाने हेतु आकर्षित विकास हेतु यह सकारात्मक परिणाम देगा। साथ लाख पालक किसानों में नवीन तकनीकों को अपनाने के प्रति रूचि एवं जागरूकता पैदा करना भी आवश्यक है ताकि परंपरागत व कम लाभ देने वाली तकनीकों के स्थान पर वैज्ञानिक पद्धति को अपनाकर अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सकें। वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग उत्पाद की कीमत व गुणवत्ता दोनों को ही बढ़ाने में सहायक है। लाख की खेती भी कुछ सीमित क्षेत्रों में ही की जाती है, अन्य क्षेत्रों में लाख पोषक वृक्षों को विकसित कर इसके उत्पादन क्षेत्र को भी बढ़ाया जा सकता है जिससे ग्रामीणों को अतिरिक्त आय तो प्राप्त होगी ही साथ ही इन क्षेत्रों में रोजगार भी उपलब्ध होगा चूंकि इस पर आधारित उद्योगों में अनेक कार्य ऐसे हैं जिन्हें पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं कुशलतापूर्वक कर सकती हैं जैसे उत्पादन पश्चात् सफाई इत्यादि अतः इन उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित कर महिला रोजगार को भी बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. बस्तर के वन वनवासियों के कुबेर
2. लाख परिचय उत्पादन व कृषि प्रक्रिया, प्रतिभा भट्नागर, बलराम लोधी, रामदीन मलावी, वन धन व्यापार जून 2016
3. विकासपीडिया
4. इंडिया वाटर पोर्टलः वनों का संरक्षित करता लाख उद्योग
5. लाख का औद्योगिम महत्वः igau.nic.in
6. LAC CULTIVATION AND THEIR HOST TREE FOUND IN